सभा का अमृत वर्ष पर्व 2011 से जून 2017

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा- विभाग) भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद का मासिक मुख-पत्र

विवरण पत्रिका

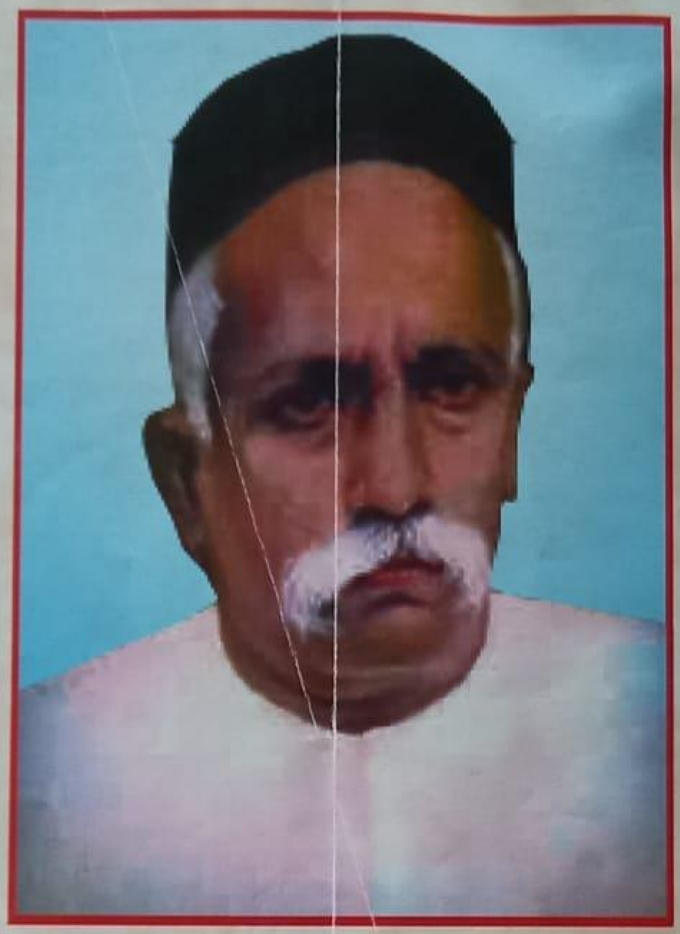

देवकीनंदन खत्री

किस्सागोई के जादूगर

जन्म : 18 जून 1861 मृत्यु : 01 अगस्त 1913

Date of Publication : 16th June 2017
Date of Posting : 20th June 2017 RNI No. 8143/62
Posting Reg.,No. H-HD.GPO/007/2015-2017 Dated 23-12-2014
Price : 18/-
ISSN 2249-8435

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद के कानूनी सलाहकार श्री सी. मल्लेश्वर राव जी के सम्मान दृश्य।

श्री सी. मल्लेश्वर राव, कानूनी सलाहकार
का सम्मान करते हुए सभा के
प्रधान मंत्री श्री एम. प्रभु।
साथ में डॉ. के. केशवराव जी राज्यसभा
सदस्य एवं प्रधान सचिव,
तेलंगाना राष्ट्र समिति, एवं अन्य।

व्यवहार का पता :-

प्रधान संपादक
विवरण पत्रिका (मासिक)
हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद,
नामपल्ली स्टेशन रोड, हैदराबाद-500 001.
दूरभाष : 23201956, 23201965
E-Mail : hps1935@gmail.com

PRINTED BOOK

सेवा में,
श्री _____

स्वामित्व-हिंदी प्रचार सभा हैदराबाद, संपादक, मुद्रक, प्रकाशक : एम.प्रभु, हिंदी लेज़र ग्राफिक्स प्रिंटर्स से मुद्रित।

डॉ. चंद्रदेव भगवंतराव कवडे
अध्यक्ष, संपादक-मंडल

एम. प्रभु जी
प्रधान संपादक

संपादक-मंडल

1. प्रो. सुरेश पुरी : सदस्य
2. डॉ. श्रीरामुलू : सदस्य
3. डॉ. नारायण वाकळे : सदस्य
4. डॉ. वसीकुर्रहमान फ़ारुक़ी : सदस्य
5. डॉ. सी.हेच. चंद्रय्या : सदस्य
6. प्रो. शुभदा वांजपे : सदस्य

◆ • ◆

डॉ. अहिल्या मिश्र
सहयोगी संपादक

एक प्रति मूल्य	-18=00,
वार्षिक चंदा	-200=00,
संस्थागत (वार्षिक)	-250=00,
आजीवन सदस्यता	-1100=00,

पत्रिका संबंधी किसी भी तरह के विवाद के लिए न्यायिक क्षेत्र हैदराबाद होगा।

'विवरण-पत्रिका' में प्रकाशित लेखकों की रचनाओं एवं विचारों से संपादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों के निजी विचार, लेख में ग्रहित तत्व, विश्लेषण एवं दायित्व हैं।

जून- 2017

वर्ष-41 | मासिक मुख-पत्र | अंक-11

विषय-क्रम

क्र.नं.	लेख का नाम	लेखक	पृ.सं.
1.	संपादकीय	: डॉ. अहिल्या मिश्र	4
2.	चलचित्र और हिन्दी साहित्यकार	: ई. सुनीता	5
3.	हिन्दी की धरती पर हिन्दी भाषा का वर्चस्व	: दासरी मौलाली	6
4.	डॉ. राही मासूम राजा के साहित्य में सामाजिक चेतना	: मोहम्मद महमूद	8
5.	देवकीनंदन खत्री : किस्सागोई के जादूगर	:	10
6.	सभा में पं. बालकृष्ण भट्ट की जयंती मनायी गयी	:	10
7.	विश्व शांति और हिंदी	: बबीता झा	11
8.	ध्रुवस्वामिनी में नारी की स्थिति	: डा. सुधा	12
9.	हिन्दी गीतिकाव्य का प्रारंभिक विकास	: डॉ. जे. उषारानी	16
10.	हिन्दी की अस्मिता और संविधान की अनुसूची में	: डॉ. नरेश कुमार	19
11.	पर्यावरण (कविता)	: ए. कीर्तिवर्द्धन	20
12.	विष्णु प्रभाकर के कथा-साहित्य में विभाजन की त्रासदी	: एम. सुधा देवी	21
13.	पत्रिका के आजीवन सदस्य	:	23
14.	'अग्निलीक' की सीता का मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण	: डॉ. के कामेश्वरी	24
15.	सभा को प्राप्त पत्रिकाएँ	:	26
16.	हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद से संबंधित गतिविधियों की झलकियाँ	:	कवर 2, 3 तथा 4

ooo

हिन्दी गीतिकाव्य का प्रारंभिक विकास

– डॉ. जे. उषारानी

Abstract :

भारतीय साहित्य परंपरा में गीत की प्रकृति और संदर्भ को प्रमुख स्थान दिया गया है। गीत शब्द का प्रयोग हमारे देश में वैदिक पुराणों से होता आया है। कवि गीत के द्वारा विभिन्न प्रकृतियों को उपस्थित करने की कोशिश करता है गीतों से जो भाव या भावात्मक विचार का भाषा में स्वाभाविक विस्फोट होती है। हिन्दी साहित्य में गीति काव्य की विकास परंपरा वैदिक पुराणों से लेकर (प्रारंभिक काल) आज की नवगीत तक किस प्रकार से हुई इसका विश्लेषण किया गया है।

Keyword :

''गीत'' का अर्थ देते हुए हिन्दी साहित्य में गीति काव्य का प्रारंभिक विकसित रूप आदिकाल से लेकर आज तक हिन्दी कवियों द्वारा किया गया सुन्दरतम वर्णन का आलेखन किया गया है।

Introduction :

गीत एक लय है, अर्थात् बहती हुई तरंगों जैसा होता है। गीत शब्द का प्रयोग हमारे देश में पुराणों से होता आया है। गीत में संगीतात्मकता मिलती है और इसी के चलते गीत को स्वरबद्ध करके गाया जाता है। गीत हमारी अंत: प्रकृति के अनुसार बाहर आता है। इसमें संगीत और अनुभूतियों की एकता होती है।

''गीत'' का शाब्दिक अर्थ ''गाया हुआ'' होता है। आरंभिक अर्द्धध्वनि पर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि 'गीत' की ही अंत: प्रकृति और अनिवार्य चरितार्थता 'गीत' है। ऋग्वेद में गीत का इतिवृत्तात्मक परिचय मिलता है। गीत तरह-तरह के होते है। कुछ शास्त्रीयता से जुडे हुए गीत हैं तो कुछ परंपरागत गीत। नृत्य गीत, राष्ट्रीयगीत जैसे गीतों की झलक हमें याद दिलाती है कि गीत के अनेक प्रकार हैं। गीत विधा क्षेमेंद्र, जयदेव, विद्यापति, मीरा एवं सूरदास आदि कवियों द्वारा विस्तृत रूप से पोषित की गई। आधुनिक युग में भारतेंदु ने गीत परंपरा को आगे बढाया। भारतीय एवं पाश्चात्य प्रभावों को स्वीकारते हुए छायावादी एवं उत्तर छायावादी कवियों ने इसे आगे बढाने की कोशिश की। प्रगतिवादी युग में राष्ट्रीय भावना के अतिरिक्त संघर्ष भाव युक्त गीतों को उपलब्धि माना जाता है। मध्यकाल के गीतों के विकास की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ स्थिति मिलती है। ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर पता चलता है कि अपने विकास क्रम में यह संगीतात्मकता न केवल वाद्ययंत्रों का सहारा लेना छोड़ चुकी है, बल्कि अत्यंत सूक्ष्मतर भी होती गयी है।

पहले गीतों का उद्देश्य मुख्यत: भारतीय जन जीवन का रंजन करना था, क्योंकि उस युग में अधिकतर गीत सामाजिक मंगल के लिए लिखे जाते थे, लेकिन आधुनिक काल में गीतों का रचना विधान कभी अतिवैयक्तिक, असमान्य अथवा असाधारण भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी माध्यम बन गया है। साहित्यिक विकास क्रम के हर काल में विभिन्न प्रकृतियों के साथ-साथ गीतों के क्षेत्र में भी नवीनतम प्रयोग होते रहे है। प्रतीत होता है कि गीतों की रचना स्फूर्तिमय मानव स्वभाव की सहज प्रवृत्ति है।

हिन्दी गीति काव्य का विकास :

''गीत'' शब्द प्रयोग आज का नहीं बरसों पुराना है। गीतों में संगीत्मकता होती है, लय होती है, एक क्रमिक शब्द विधान होता है। हिन्दी में गीतिकाव्य के प्रारंभ का परिचय मैथिल कोकिल विद्यापति एवं संत कबीर के रचनाओं में मिलता है। इनके बाद मीरा, तुलसी, सूर आदि में।

गुलाबराय का मत है कि हिन्दी काव्य के प्रथम दर्शन संत कवियों के वाणी में होते हैं।

गीतिकाव्य हिन्दी साहित्य की एक ऐसी अक्षुण्य परंपरा है, जिसे वीरगाथाकाल से लेकर आज तक

प्रमुख हिन्दी कवियों द्वारा अपनी गहरी अनुभूतियों को व्यक्त करने का माध्यम बनाया गया। हिन्दी गीतिकाव्य 1950 के आस-पास रचित कुछ ऐसी रचनाएँ मिलती हैं जो कथ्य, शिल्प और दर्शन आदि में पूर्ववर्ती गीतों से भिन्न है।

आदिकालीन प्रबंधकाव्यों और वीरगाथाओं में भी भिन्नता आती रही है। इन गीतों में वीरता और श्रृंगार वर्णनों के प्रति विशेष उत्साह लक्ष्य किया जाता है। हिन्दी-साहित्य में गीत की एक संपूर्ण परंपरा का प्रवर्तन मैथिल-कोकिल विद्यापति के पदों से होता है। उस समय के निर्गुण भक्त कवियों ने अपने गीतों द्वारा निराकार ब्रह्म को भी मानो साकार कर देना चाहा। तुलसीदास की 'गीतावली' में गीत की मधुरता है और उनकी विनय पत्रिका में आत्म विनय और दीनता का गीतात्मक साक्षात्कार है। रीतिकाल में चमत्कारपूर्ण अलंकार विधान आदि है।

ऐतिहासिक दृष्टि से छायावादी युग की समाप्ति 1936 ई. में होती है। इस युग के कवियों की रचना में उच्चकोटि के गीतों के दर्शन होते है। राष्ट्रीय-चेतना और नवजागरण से जुड़े उस समय के गीतों में विशेष रूप से उद्‌बोधन होता था। उस समय के कुछ कवि प्रगतिशील भावों से भौतिक जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्त करने की ओर प्रयत्नशील थे। छायावाद के उत्तरार्द्ध में मोहभंग के दौर से गुजरती हुई युवा पीढी का भोगवादी मन वैयक्तिक हर्ष-विषाद के निरावृत्त वाणी में अभिव्यक्त करना चाह रहा था। आर्थिक समस्याओं से पीड़ित वर्तमान समाज का अपनी आकांक्षाओं से निर्मित चित्रों की ओर आकृष्ट होना स्वाभाविक ही था।

बच्चन ने लोक-धुनों पर अनेक गीतों का निर्माण किया। 1948 में प्रकाशित ''खादी के फूल'' नामक शोकगीत से गाँधी जी के महान व्यक्तित्व पर प्रकाश पड़ता है। उनके अनुसार गाँधी जी देश के सबसे सुनहले, चमकते, यशस्वी दीप थे। 1958 के ''आरती और अंगारे'' के गीत बहुत प्रभावशाली है। त्रिभंगिमा में (1961) ग्राम गीतों का सरस सलोनापन है तथा जीवन के द्वन्द्वों पर बैठकर संघर्ष करने का भाव भी-

जीवन हँसी भी, जीवन रूदन भी
जीवन खुशी भी, जीवन घुटन भी
जो न जीवन की गत पर गाये।
उसे नहीं जीने का हक है
-''त्रिभंगिमा''

नरेंद्र शर्मा के 'प्रवासी के गीत' में तीव्र अनुभूतियों के गायक के रूप मिलती है। दिनकर रचना की दृष्टि से ओज के स्वर रचते रहे। लेकिन 'नीलकुसुम' (1955) के गीतों में अनेक नवीन विशेषताओं से युक्त होकर प्रयोगवादी भी हो गये हैं। 1962 के बाद चीन के आक्रमण के बाद लिखित गीतों में दिनकर का आवेश ओजपूर्ण स्वरों में प्रकट हुआ है। यहाँ दिनकर का कवि तरुण भावनाओं से भर उठता है-

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा संभालो
चट्टानों की छाती से धूल निकालो
है रूकी जहाँ भी धार शिलाएँ तोडो
पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोडो
चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियो रे
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।
-परशुराम की प्रतीक्षा - पृ. 18

प्रगतिवाद : छायावाद काल के अधिकांश छायावादी ही प्रगतिवादी बने। निराला जैसे महान कवि का व्यक्तित्व प्रगति और प्रयोगवादी आंदोलनों की विशेषताएँ अपने काव्य में समाहित करके चला। उनके गीतों में भाव-सौंदर्य उत्कृष्ट शब्द-योजना में ढ़लता है। पंत की कविताओं में सहजानुभूति की प्रधानता होती है। पंत की शैली का सरस- प्रदर्शन गीतों में भरपूर होता है-

स्वप्न सेतु -सा शत वर्णों का इन्द्र धनुष स्मित
खुलता सहजा मनोनयन में,
मोर पिच्छ के नील हरित मणि मुकुट सहसों
टिपते वन में, घन में
-वाणी - पृ. 31

प्रगतिवादी गीतकार शिवमंगल सिंह 'सुमन' भावुक और कोमल हृदय के कवि हैं। रूप तथा सौंदर्य को बार-बार देखते रहने की मानवीय दुर्बलता उन्होंने इस प्रकार व्यक्त करते हैं-

कितनी बार तुम्हें देखा
पर आँखे नहीं भरी
सीमित उर में चिर असीम सौंदर्य समा न सका
बनि मुग्ध बेसुध-कुरंग मन रोके नहीं सका
यों तो कई बार पी-पीकर जी भर गया छका
एक बूँद थी किन्तु
कि जिसकी तृष्णा नहीं मरी।

आँखे नहीं भरी-पृ.17

प्रगतिवादी कवि रांगेय राघव जीवन के आर्थिक तथा राजनीतिक पक्षों से विशेषत: प्रभावित होते हैं, अत: उनकी बातों में मितभाषिता तथा मौन कम होता है।

प्रयोगवाद : प्रयोगवाद एक ओर तो छायावादी तथा उत्तर छायावादी कविता की व्यक्तिवादी मनोवृत्ति का विस्तार हैं और दूसरी ओर छायावाद की अतिशय कल्पनाशीलता, स्वप्नशीलता, आदर्शवादिता एवं भावुकता का विरोधी है। सन् 1950 और 56 के गीतों के बीच के गीतों में आत्यंतिक व्यक्तिपरता ही नहीं दिखाई पड़ती है मगर शैली और शिल्प की तराश मिलती है। प्रयोगवादी धारा के अंतर्गत आनेवाले धर्मवीर भारती की रचनात्मकता की प्रधानता : गीतात्मकता हैं। उनकी दृष्टि में प्रकृति नारी चेतना की अभिव्यक्ति का प्रतीक है। यहाँ विविध मनोवृत्तियों की रचनाएँ "ठंडा लोहा" में संग्रहीत है। कवि व्यापंक यथार्थ की भावना से भरकर कहता है-

मैं प्रमथ्यु :
कटु मैं नहीं हूँ
घृणा मैं किससे करूँगा।

-ठंडा लोहा -पृ. 37

नवगीत : नवगीत हर प्रकार की सामाजिक स्थितियों की अभिव्यक्ति मिलती है। नवगीत के बीज बच्चन, भगवती चरण वर्मा और अंचल में खोजे जा सकते हैं। इन गीतों में आधुनिक जीवन की समस्याओं को अभिव्यक्ति हो, इससे भला किसको असहमति हो सकती है। इस धारा में सामाजिक परिवेश की आत्मभिव्यक्ति मिलती है। नवगीतकार शंभुनाथ के गीतों में व्यक्ति के सामाजिक चेतना का बोध मिलती है यथा-

जहाँ दर्द नीला है
वहीं कहीं मैं हूँ
जहाँ नहीं आदमी नहीं आमदजात,
समय जहाँ पथराकर बन गया पहाड,
जहाँ सिर्फ रात, सिर्फ रात सिर्फ रात।

-वसंती

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'गीत' का हमारे देश की प्राचीन साहित्य से संबंध जुडी हुई है। गीतकार अपनी अभिव्यक्ति को गीतों के माध्यम से स्पष्ट करता है। प्राचीन काल से इसकी विकास परंपरा को देखने से पता चलता है कि कल्पनाशीलता, भावुकता को स्थान दिया गया है। हिन्दी गीत काव्य के विकास क्रम में इसकी रूप बदलती हुई सामाजिक अभिव्यक्ति को प्रधानता दी गई है।

साधारण रूप में सुख-दुख की भावावेशमयी अवस्था विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है। ●

संदर्भ ग्रंथ :

1. उषा मृणालिनी-गीति काव्य में भावना सुशीला प्रकाशन अजमेर।
2. डॉ. ओम प्रकाश अग्रवाल-हिन्दी गीति काव्य संस्करण सं.2007, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा।
3. धर्मवीर भारती-ठंडा लोहा - 1970 भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-110001
4. धर्मवीर भारती-सात गीत वर्ष -तृतीय संस्करण 1976, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली-110001
5. रामचन्द्र शुक्ल-हिन्दी का इतिहास संवत-2003 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

पत्र-पत्रिकाएँ : वासंती, दिसंबर 1969

संपर्क : हिन्दी लेक्चरर,
डी.एस. गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज फार वुमेन
ओगोल, आं. प्र.-523001
फोन. नं. 9490443058